साहित्य को सिनेमा की भाषा में ढलना होगा

पुस्तकों से रील तक और रील से पुस्तकों तक : सिनेमा और साहित्य अंतरक्रिया विषय पर आयोजित परिचर्चा में विशेषज्ञ ने रखी बात

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: सिनेमा एक नई विधा है। साहित्य को सिनेमा की भाषा में ढलना होगा, तभी दोनों के संबंध एक दूसरे के लिए पूरक होंगे। यह बात पटकथा लेखक अतुल तिवारी ने कही। वे साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के चौथे दिन पुस्तकों से रील तक और रील से पुस्तकों तक : सिनेमा और साहित्य अंतरक्रिया विषय पर सिने समालोचक अरुण खोपकर की अध्यक्षता में आयोजित चर्चा में बोल रहे थे।

साहित्योत्सव के चौथे दिन आयोजित सत्र में चर्चा करते विशेषज्ञ ● सौजन्यः साहित्य अकादमी

पटकथा लेखक अजित राय ने कहा कि यह जरूरी नहीं कि अच्छे साहित्य पर अच्छी ही फिल्म बने या फिर खराब साहित्य पर खराब फिल्म ही बने। सिनेमा एक दूसरी विधा है, इसलिए साहित्य को उसके अनुसार ढलने की जरूरत है। मुर्तजा अली ने कई विदेशी फिल्मों के साहित्यकरण के उदाहरण देते हुए बताया कि अमूमन लेखक और निर्देशक के बीच सहमति और असहमति की स्थिति बनी रहती है। निरुपमा कोतरु ने श्याम बेनेगल का उदाहरण देते हुए कहा कि साहित्यिक कृति को सम्मानजनक तरीके फिल्माने के लिए अच्छे निर्देशक की जरूरत होती है। रत्नोत्तमा सेन गुप्ता ने कहा कि सिनेमा जहां डायलाग का माध्यम है, वहीं साहित्य विस्तार का। जिस तरह से थियेटर को साहित्य में समाहित होने के लिए लंबा समय लगा, वैसे ही सिनेमा को साहित्य का हिस्सा बनने के लिए अभी समय लगेगा।

त्रिपुरारी शरण ने कहा कि पापुलर साहित्य और आर्ट का झगड़ा हमेशा चलता रहा है। लेकिन, यह एक दूसरे के पूरक हैं और हमेशा मिलकर काम करते रहेंगे। अंत में परिचर्चा के अध्यक्ष अरुण खोपकर ने कहा कि एक नई विधा के रूप में सिनेमा ने बहुत जल्दी ही साहित्य सहित अन्य विधाओं को भी अपने अंदर बहुत जल्दी समाहित किया है।

सिनेमा जहां अन्य विधाओं से ले रहा है तो वहीं अन्य विधाओं को कुछ दे भी रहा है। फिल्मों ने एक नई भाषा को भी जन्म दिया है। इसके बाद स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात अंग्रेजी व हिंदी विद्वान हरीश त्रिवेदी ने प्रस्तुत किया और बीज वक्तव्य प्रख्यात हिंदी कवि एवं आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। कार्यक्रम में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक एवं उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा भी शामिल थीं। आदिवासी लेखक और उत्तरी-पूर्वी लेखक सम्मिलन का भी आयोजन हुआ।

आमने-सामने कार्यक्रम के अंतर्गत पुरस्कृत रचनाकारों नीलम शरण गौड़ (अंग्रेजी), विनोद जोशी (गुजराती), संजीव (हिंदी), आशुतोष परिड़ा (ओड़िआ) एवं त. पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) से प्रतिष्ठित साहित्यकारों- विद्वानों से बातचीत के सत्र भी आयोजित हुए। पूरे दिन में 30 सत्रों में विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई।